Vol. 1; Issue 4; September-December 2023; ISSN No. 2583-6994

पत्रकारों की कार्यशैली पर मोबाइल फोन का प्रभाव (उत्तराखंड राज्य से प्रकाशित हिन्दी समाचार पत्रों के विशेष संदर्भ में)

6

सुमित जोशी
शोधार्थी, स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड लिबरल आर्ट्स, देवभूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय, देहरादून (उत्तराखंड)

डॉ. चेतन भट्ट
असिस्टेंट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड लिबरल आर्ट्स, देवभूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय, देहरादून (उत्तराखंड)

डॉ. राकेश चंद्र रयाल
एसोसिएट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी (उत्तराखंड)

शोध सारांश

भारत में मोबाइल फोन और इंटरनेट दोनों का आगमन सन् 1995 में मात्र पंद्रह दिनों के अंतराल में हुआ था। संचार के इन दोनों माध्यमों को लगभग तीसरा दशक पूरा होने जा रहा है। ऐसे में मोबाइल और इंटरनेट जन सामान्य की दिनचर्या का अहम हिस्सा बन चुके हैं। हालांकि भविष्य की संभावनाओं को देखते हुए भारतीय मीडिया संस्थानों ने इस समृद्ध होती तकनीक और दूरस्थ क्षेत्रों तक विस्तार से मीडिया जगत में इंटरनेट और मोबाइल के प्रयोग में बढ़ोत्तरी की है। इस शोध पत्र में उत्तराखंड राज्य के हिंदी समाचार पत्रों को केंद्र में रखकर उनमें कार्यरत पत्रकारों की कार्यशैली पर मोबाइल फोन के प्रभाव का अध्ययन किया गया। अध्ययन में मोबाइल फोन से तात्पर्य वर्तमान समय के स्मार्टफोन से है, जिसमें इंटरनेट और कैमरा के साथ विभिन्न सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। साथ ही पत्रकारों की कार्यशैली में बदलाव का तात्पर्य समाचार प्राप्त करने के तरीके, मोबाइल फोन पर पत्रकारीय कार्य हेतु उपयोग होने वाले एप्लिकेशन, कार्यक्षेत्र में पत्रकारों की गतिविधि, उनके समक्ष समस्याओं से है। अध्ययन में पाया गया है कि हिन्दी समाचार पत्रों के पत्रकारों का कार्य मोबाइल केंद्रित हुआ है, वह पत्रकारीय कार्य में सर्वाधिक व्हाट्सएप मोबाइल एप्लिकेशन की मदद ले रहे हैं और व्हाट्सएप पर उन्हें सर्वाधिक प्रेस नोट और बयान आदि टंकित रूप में प्राप्त हो रहे हैं। साथ

ही समाचार पत्रों के संवाददाता फोटो भी स्वयं ही लेने लगे हैं। प्रिंट मीडिया संस्थानों ने संवाददाताओं को मोबाइल एप्लिकेशन उपलब्ध कराए हैं और इसके प्रयोग हेतु प्रोत्साहित भी कर रहे हैं। हालांकि, उत्तराखंड राज्य में मोबाइल नेटवर्क का प्रभावित हो जाना पत्रकारों के लिए समस्या उत्पन्न कर रहा है। भविष्य में समाचार पत्र संस्थान अपने पत्रकारों से मोबाइल फोन के माध्यम से ही समाचार लेखन करवाएं इसकी प्रबल संभावना बन रही है। साथ ही संवाददाताओं का स्वयं फोटो लेना प्रिंट मीडिया के फोटोग्राफरों के रोजगार हेतु भी समस्या के संकेत हो सकते हैं।

संकेत शब्दः प्रिंट मीडिया, इंटरनेट, मोबाइल, पत्रकार, संचार शोध आदि।

प्रस्तावना

संचार प्रौद्योगिकी निरंतर विकास के पथ पर अग्रेषित है। इसी श्रंखला में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से जनसंचार माध्यमों में भी तीव्र रूप से तकनीकी विकास देखने को मिल रहा है। विगत दो दशकों में समूचे संचार जगत में अविश्वसनीय विकास हुआ है।" (झिंगरन, 2021) वर्ष 1973 में आविष्कृत और वर्ष 1983 में प्रयोग हेतु निर्मित मोबाइल फोन तकनीक ने संचार तथा जनसंचार क्षेत्र को भी परिवर्तित किया है। मोबाइल फोन का भारत में विधिवत आगमन मोदी टेल्स्ट्रा कंपनी द्वारा 31 जुलाई 1995 को हुआ। साथ ही 15 अगस्त 1995 को विदेश संचार निगम लिमिटेड के रूप में भारत में इंटरनेट सेवा को प्रारम्भ किया गया।" (dot.gov.in)

समय के साथ–साथ मोबाइल और इंटरनेट तकनीक दोनों ही विकसित एवं समृद्ध हुई हैं। मोबाइल फोन में इंटरनेट की सुविधा प्राप्त होने से विभिन्न तकनीकी परिवर्तन देखने को मिले जिसमें–संदेश भेजने, ध्वनि को रिकॉर्ड करने के साथ–साथ कैमरा और संगीत जैसी सुविधाएं भी मिलने लगीं। वर्ष 2009 में '3–जी', 2012 में '4–जी' इंटरनेट सेवा की शुरुआत हुई (भास्कर, 2020), इससे देश में एक नई संचार क्रांति का उदय हुआ। इसी क्रम में 01 अक्टूबर 2022 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने तीव्र गति वाली '5–जी' सेवा को प्रारंभ किया। वर्ष 2023 में जारी भारतीय दूरसंचार विनीयामक प्राधिकरण की त्रैमासिक रिपोर्ट के अनुसार "भारत में अक्टूबर से दिसम्बर 2022 के मध्य 1142.93 मिलियन उपभोक्ता मोबाइल और 865.90 मिलियन उपभोक्ता इंटरनेट का प्रयोग करते हैं।" इसके द्वारा मोबाइल तथा इंटरनेट तकनीक की आमजन तक पहुंच का अनुमान लगाया जा सकता है। वहीं, आधुनिकता के इस विकास से पत्रकारिता और पत्रकार भी अछूते नहीं रहे। इंटरनेट ने सूचना और समाचारों को गति प्रदान की है, तो मोबाइल फोन ने पत्रकारों के काम को पहले की अपेक्षा बहुत आसान बना दिया है। (मिश्र, 2020) भारत में 90 के दशक में मोबाइल और इंटरनेट के आगमन से मीडिया संस्थानों ने इसकी शक्ति का अनुमान लगाते हुए, नवीन संचार तकनीक आने के साथ ही डिजिटल माध्यमों का प्रयोग भी प्रारम्भ कर दिया था। "सबसे पहले अंग्रेजी समाचार पत्र 'द हिन्दू' ने अपना ऑनलाइन संस्करण 1995 में शुरू कर दिया था। इसके बाद हिन्दुस्तान

टाइम्स और द टाइम्स ऑफ इंडिया ने 1996, हिन्दी के प्रमुख समाचार पत्र दैनिक जागरण ने 1997 और अमर उजाला ने 1998 में अपने डिजिटल संस्करण शुरू कर आधुनिकता के युग में प्रवेश किया।" (कुमार, संजय, 2010) साथ ही "वेब 2.0 आने के बाद समाचार पत्र संस्थानों की वेब समर्पित साइटें बनने लगीं।" (पार्थसारथी और श्रीनिवास, 2013) वहीं, एक शोध के अनुसार प्रिंट मीडिया ने 21वीं सदी के प्रथम दशक के अंत तक वेबसाइटों के माध्यम से वीडियो प्रसारित करना भी प्रारम्भ कर दिया था।

पत्रकारिता की अन्य विधाओं के साथ–साथ समाचार पत्रों से संबंधित पत्रकारों को कभी–भी और कहीं से भी न्यूज रूम तक समाचार भेजने की सुविधा मिली है। एक छोटे से उपकरण में फोटो–वीडियो बनाने सहित नोटपैड जैसी सुविधाएं मिलने से संवाददाता के लिए कार्य आसान हो गया है। जिन दूरस्थ क्षेत्रों में पहुंचना संभव नहीं हो पाता, इन क्षेत्रों में घटित होने वाली घटनाओं के बारे में भी मोबाइल पर ही सूचनाएं प्राप्ता की जा सकती हैं। संवाददाता के साथ–साथ संपादकों के लिए भी अपनी टीम को संयुक्त रूप से निर्देशित करने के लिए मोबाइल एक सहायक उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाने लगा है। इसके लिए पत्रकार और समाचार संस्थान मोबाइल फोन पर विभिन्न सोशल मीडिया और मैसेंजिंग एप्लीकेशन का प्रयोग कर रहे हैं। वहीं, "जब नई प्रौद्योगिकी आती है तो उसका क्रियांवयन करने से पहले तकनीकी रूप में दक्ष होने की दरकार होती है। ऐसे में मीडिया संस्थानों द्वारा अपने पत्रकारों के मोबाइल ऑपरेटिंग प्रशिक्षण पर बल दिया जा रहा है, ताकि वह पत्रकारिता कार्य को मोबाइल उपकरणों की सहायता से कर सकें।" (वेंगर, ओवेन्स और थॉमसन, 2014) ऐसे में मोबाइल फोन का पत्रकारिता में प्रयोग और पत्रकारों की कार्यशैली में होने वाले परिवर्तनों को जानना महत्वपूर्ण हो जाता है। साथ ही भारत के मीडिया उद्योग में हिन्दी भाषी समाचार पत्रों की प्रसार संख्या बहुत अधिक है, "आंकड़ों को यदि देखें तो भारत में विविध भाषाओं के समाचार पत्रों में हिन्दी के समाचार पत्रों की प्रसार संख्या 44.33 प्रतिशत है।" (एबीसी, अप्रैल 2023) ऐसे में इस शोध पत्र में हिन्दी समाचार पत्रों को केंद्र में रखकर मोबाइल फोन के प्रभाव से पत्रकारों की कार्यशैली में होने वाले परिवर्तनों को जानने का प्रयास किया गया है। साथ ही सूचना तथा समाचार प्राप्त करने की विधि मेंहुए परिवर्तनों के लिए मोबाइल पर इंटरनेट चलित प्लेटफार्म संबंधित बिंदुओं को पता लगाने का एक सार्थक प्रयास किया गया है।

साहित्य समीक्षा

पत्रकारिता के प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और वेब माध्यमों में सभी का काम सूचनाएं पहुंचाना तो है, लेकिन इनकी कार्यशैली में भिन्नताएं हैं। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में विजुअल और रेडियो में ऑडियो की आवश्यकता होती है, तो वहीं समाचार पत्र के पत्रकारों को घटना को मौके पर कवर करने के बाद कार्यालय जाकर लिखना होता है। इस काम में समय प्रबंधन भी बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन मोबाइल फोन तकनीक के विकसित व समृद्ध होने से "एक स्मार्ट फोन में अच्छे इंटरनेट के साथ ही बेहतर गुणवत्ता के कैमरे की सुविधा भी मिली है। साथ ही समाचारों को कवर करने, प्रकाशन स्थल तक पहुंचाने के पारंपरिक तरीके की तुलना में कम

समय लगता है।" (Mohammedsalih, 2017) ऐसे में "पेशेवर पत्रकारों को समाचार लिखने और प्रकाशित करने के लिए एक स्मार्ट मोबाइल फोन से अधिक की जरूरत नहीं है।" (गौजार्ड, 2016) पत्रकारिता शैली में परिवर्तनों को देखते हुए, "पत्रकारों को जानकारी एकत्र करने के लिए अब कलम और डायरी की आवश्यकता नहीं है, बल्कि वह मोबाइल फोन पर ही जानकारी नोट कर समाचार को तेजी से प्रसारित–प्रकाशित भी कर सकते हैं।" (Twizeyumuiza, Mberia -Nabuzale, 2018) साथ ही "मोबाइल फोन पररिकॉर्डिंग, सम्पादन और लाइव प्रसारण की सुविधा मिलने से समय पर समाचार प्रकाशित करने के लिए पत्रकार को न्यूनतम तैयारी की आवश्यकता होती है, ऐसे में यह उपकरण समय और स्थान की बाधा को भी दूर करता है।" (रोबैनो, 2012) वहीं, "समाचार पत्र के पत्रकारों के लिए पहले समय सीमा पर काम पूरा करना तनावपूर्ण होता था, लेकिन मोबाइल फोन ने पत्रकारों को इस समस्या का समाधान दिया है और वह किसी भी स्थान से समाचार भेज सकते हैं।" (Twizeyumuiza, Mberia-Nabuzale, 2018) अब तो समाचार पत्र संस्थानों ने विशेष परिस्थितियों में मैसेजिंग मोबाइल एप्लिकेशन व्हाट्सएप के माध्यम से भी सूचनाएं भेजने की सुविधा संवाददाताओं को प्रदान की हैं। दैनिक हिन्दुस्तान समाचार पत्र ने वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के समय लोगों से संवाद पर आधारित सूचनाओं को 'व्हाट्सएप संवाद' के नाम से प्रकाशित किया। वहीं अब, दैनिक जागरण समाचार पत्रमें न्यूज स्टोरी के साथ वेब लिंक भी प्रकाशित किया जा रहा है। साथ ही समाचार सामग्री के साथ ही वीडियो कंटेंट पर भी ध्यान दिया जाने लगा हैं। इस शोध अध्ययन में पत्रकारों की कार्यशैली में हुए परिवर्तनों तथा उनके प्रभावित होने की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए एक समग्र अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

मोबाइल की विकास यात्राः एक सामान्य फोन से स्मार्टफोन तक

मोबाइल फोन वर्तमान में हमारी दिनचर्या का अहम हिस्सा बन चुका है। कॉलिंग ही नहीं जीवन के विशेष अवसरों को संजोने के साथ ही बैंकिंग, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी तमाम सुविधाएं इस छोटे से उपकरण द्वारा प्राप्ते हो रही हैं। यह सब इंटरनेट की सुविधा से संभव हो सका है। जनसंचार जगत में इसकी शुरूआत लगभग 50 वर्ष पूर्व मानी जाती है। 'मोटरोला कम्पनी में कार्यरत इं. मार्टिन कूपर ने वर्ष 1973 में मोबाइल का आविष्कार किया, लेकिन इस प्रयोग को समृद्ध होने में 10 वर्षों का समय लगा और 1983 में मार्टिन कूपर और उनके सहयोगियों ने इस उपकरण को उपयोग हेतु निर्मित किया। विश्व के पहले मोबाइल का नाम डायनाटैक 8000 एक्स रखा गया।' (झिंगरन, 2021) डायनाटैक का संक्षिप्तीकरण 'Dynamic Adaptive Total Area Coverage' है। 16 अगस्त 1994 को आईबीएम कंपनी ने पहला स्मार्टफोन लॉन्च किया। इसकी कीमत 800 डॉलर थी। इस फोन ने मोबाइल की परिभाषा को बदल दिया था, क्योंकि एक टचस्क्रीन फोन होने के साथ ही मोबाइल पर पेजर, फैक्स मशीन और पर्सनल डिजिटल असिस्टेंट आदि कई आधुनिक विशेषताएं प्रदान किये'। (Gizbot, 2022)

'इस तकनीकी विकास के दौरान वर्ष 1999 में मोबाइल फोन उपकरण में कैमरे की सुविधा प्राप्त हुई। जापानी कंपनी Kyocera ने अपने VP-210 मोबाइल फोन में पहली बार

कैमरा का प्रयोग किया। साथ ही इसे पहला रंगीन फोन भी माना जाता है।' (दैनिक भास्कर, 2020) वहीं 23 जून 2009 को ताइवान की कंपनी एचटीसी ने भारत में पहला स्मार्टफोन फोन लॉन्च किया। इसकी कीमत रू. 30,000 थी और यह गूगल के ओपन सोर्स एंड्रॉयड सिस्टम पर आधारित था' (Economic Times, 2009) इसके बाद से ही भारत में ड्यूअल सिम, बैक–फ्रंट कैमरा आदि जैसे नई तकनीक से युक्त फोन निरंतर बाजार में उपलब्ध होते रहे हैं। ऐसे में मोबाइल फोन एक ऑल इन वन डिवाइस बन गया है।

ऐतिहासिक संदर्भ में 'पत्रकारिता जगत में मोबाइल के उपयोग की शुरूआत अमेरिका से हुई। यहां फ्लोरिडा में गनेट समाचार पत्र ने इस ओर देखा और इस अखबार के संवाददाताओं ने मोबाइल फोन पर समाचार एकत्र करना शुरू किया।' (बस्तवी, 2022) इधर, भारत की बात करें तो यहां 'एनडीटीवी समाचार चैनल की पत्रकार बरखा दत्त ने पत्रकारिता में मोबाइल का प्रयोग शुरू किया था।' हालांकि, अब प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया संस्थान मोबाइल फोन का उपयोग करने लगे हैं। ऐसे में अधिकांश इलेक्ट्रॉनिक मीडिया चैनलों ने छोटे संस्थानों में कार्यरत कैमरामैनों को बेरोजगार कर नियमित संवाददाताओं को उच्च गुणवत्ता वाले कैमरा फोन भी प्रदान किए हैं।

शोध समस्या का निर्माण

मोबाइल फोन का आविष्कार हुए तकरीबन 50 वर्ष हो गए हैं और स्मार्टफोन लगभग तीन दशक पहले ही लॉन्च हुआ है। समय के साथ विकसित होती मोबाइल फोन तकनीक आज इतनी समृद्ध हो चुकी है कि इसके द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक लेन–देन तक संभव हो चुका है। साथ ही वर्चुअल माध्यम से लोगों की भौतिक दूरियां भी लगभग समाप्त हो चुकी हैं। मोबाइल फोन को बहुपयोगी बनाने हेतु विभिन्न क्षेत्रों में मोबाइल फोन उपयोगी सिद्ध हुआ है तो पत्रकारिता क्षेत्र भी अछूता नहीं है। पत्रकारिता में समाचार पत्र–पत्रिकाओं, न्यूज चैनलों और रेडियो जैसे माध्यमों के सूचना संग्रह और कवरेज की प्रक्रियाओं में भिन्नताएं हैं। न्यूज चौनलों के संवाददाता मोबाइल पर विजुअल प्राप्त करने के साथ–साथ स्क्रिप्ट भी न्यूज रूम में भेज सकते हैं तो वहीं रेडियो में ऑडियो की आवश्यकता होती है, लेकिन प्रिंट मीडिया के संवाददाताओं को किसी घटना या आयोजन की कवरेज कर उसे विस्तार और रोचकता प्रदान करते हुए पाठक के समक्ष प्रस्तुत करना पड़ता है। इसमें समय प्रबंधन भी बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसे में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की अपेक्षा प्रिंट मीडिया के पत्रकारों की कार्यशैली थोड़ी भिन्न है। मोबाइल फोन ने समाचार पत्रों के पत्रकारों की कार्यशैली को किस प्रकार प्रभावित किया है यह जानना महत्वपूर्ण हो जाता है। साथ ही प्रिंट मीडिया संस्थान मोबाइल फोन द्वारा समाचार लेखन के लिए पत्रकारों को किस प्रकार प्रेरित कर रहे हैं यह भी रोचक विषय है। इन्हीं प्रमुख बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए यह शोध कार्य किया गया है।

अध्ययन हेतु प्रश्न

- स्मार्ट फोन तकनीक विकसित होने से समाचार पत्रों से संबंधित पत्रकारों की कार्यशैली में क्या बदलाव आए हैं?

- क्या समाचार पत्रों से जुड़े पत्रकारों की कार्यशैली मोबाइल फोन केंद्रित हुई है?
- पत्रकार मोबाइल पर किसी सोशल मीडिया एवं मैसेंजिंग एप्स का उपयोग तो नहीं करते, यदि हां तो वह एप्लिकेशन कौन सी है?
- क्या प्रिंट मीडिया संस्थान स्वयं समाचार लेखन के लिए पत्रकारों को मोबाइल एप्लिकेशन उपलब्ध करा रहें?
- क्या मोबाइल फोन द्वारा समाचार कवरेज और कार्यक्षेत्र से संबंधित गतिविधियों में किसी प्रकार का परिवर्तन हुआ है?

अध्ययन के उद्देश्य

- स्मार्ट फोन तकनीक समृद्ध होने से समाचार पत्रों के पत्रकारों की कार्यशैली में हुए परिवर्तनों को जानना।
- यह जानना कि क्या समाचार पत्रों के पत्रकारों की कार्यशैली मोबाइल फोन केंद्रित हो गई है?
- यह जानना कि समाचार पत्रों के पत्रकार मोबाइल पर किस एप्लिकेशन का उपयोग अपने कार्य में अधिक कर रहे हैं?
- यह जानना कि प्रिंट मीडिया संस्थान स्वयं समाचार लेखन के लिए पत्रकारों को कौनसा मोबाइल एप्लिकेशन उपलब्ध करा रहें?
- यह जानना कि मोबाइल एवं सोशल मीडिया द्वारा समाचारों की कवरेज में किस प्रकार का परिवर्तन आया है?

अध्ययन हेतु शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन समाचार पत्रों के पत्रकारों की कार्यशैली पर मोबाइल फोन के प्रभावों को जानने हेतु किया गया है। इस अध्ययन के अंतर्गत उत्तराखंड राज्य से प्रकाशित होने वाले हिन्दी समाचार पत्रों में कार्यरत पत्रकारों को निदर्शन पद्धति द्वारा चयनित किया गया है। अध्ययन हेतु किये गए सर्वेक्षण द्वारा आंकड़ों का संग्रह करने के लिए प्रश्नाहवली विधि का प्रयोग किया गया। शोध समस्या के समाधान के लिए प्रश्नाअवली में कुल 16 प्रश्नों को सम्मिलितकर गूगल फॉर्म के माध्यम से उत्तरदाता के रूप में चयनित उत्तराखंड राज्य के कुल 100 पत्रकारों को प्रश्नाआवली प्रेषित की गई। प्रति उत्तर में कुल 70 उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रश्नोावली द्वारा तथ्य संकलन कार्य को पूर्ण कर उन्हें प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषण हेतु सम्मिलित किया गया।

संकलित आंकड़ों का विश्लेषण

1. क्या आपके समाचार पत्र संबंधी कार्य पूर्ण रूप से मोबाइल पर केंद्रित हो गए हैं?

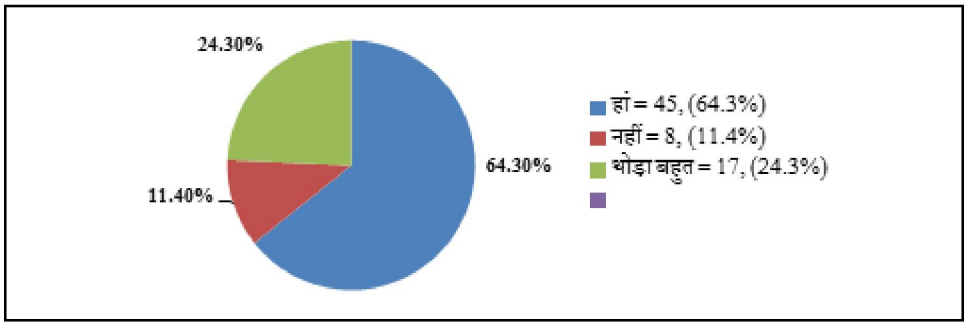

विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में पत्रकारों की कार्यशैली पर मोबाइल के प्रभाव को जनाने के लिए उत्तरदाताओं से सर्वप्रथम उनके समाचार पत्र संबंधित कार्य को लेकर प्रश्न पूछा गया था। कुल उत्तरदाताओं में से लगभग 64 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकारा कि उनका कार्य मोबाइल केंद्रित हुआ है, जबकि लगभग 24 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि उनका कार्य थोड़ा–बहुत मोबाइल केंद्रित हुआ है, वहीं मात्र 11 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उनका काम मोबाइल केंद्रित नहीं हुआ है। इससे प्रतीत होता है कि हिन्दी समाचार पत्रों के पत्रकारों की कार्यशैली मोबाइल फोन पर केंद्रित हुई है।

2. समाचार पत्र संबंधित कार्य के लिए आप मोबाइल पर सबसे अधिक किस मेलिंग/मैसेंजर या सोशल नेटवर्किंग एप्लीकेशन का उपयोग करते हैं?

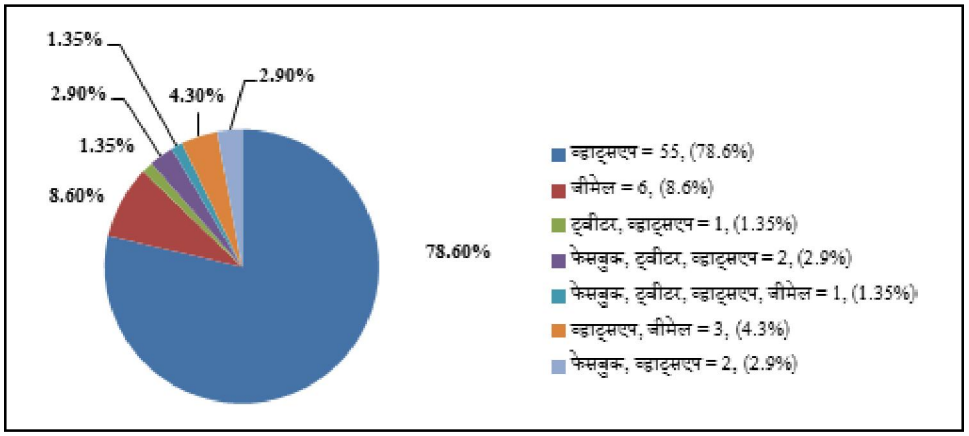

विश्लेषण

वर्तमान में यह भी एक अहम पहलू है, इसे लेकर उत्तरदाताओं से पूछे गए प्रश्न में सर्वाधिक 78.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वे मोबाइल पर समाचार पत्र संबंधित कार्य के लिए व्हाट्सएप का उपयोग करते हैं। जबकि, 8.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जी–मेल, लगभग 4

प्रतिशत उत्तरदाताओं ने व्हाट्सएप और जी–मेल दोनों, लगभग 3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने फेसबुक और व्हाट्सएप और इतने ही उत्तरदाताओं ने फेसबुक, व्हाट्सएप और ट्वीटर का समान रूप से उपयोग करने की बात कही। साथ ही प्रतिभागी उत्तरदाताओं में से 1.3 प्रतिशत ने ट्वीटर और व्हाट्सएप और इतने ही उत्तरदाताओं ने फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्वीटर और जी–मेल का उपयोग करना स्वीकारा। प्राप्त प्रतिक्रियाओं से पता चलता है कि समाचार पत्रों से संबंधित सर्वाधिक कार्य अन्य मोबाइल एप्लिकेशनों की अपेक्षा व्हाट्सएप के माध्यम से ही किए जा रहे हैं।

3. क्या आपको सरकारी और गैर सरकारी कार्यक्रमों के प्रेस नोट, राजनेताओं की प्रतिक्रियाएं एवं बयान आदि मोबाइल पर ही प्राप्त होने लगे हैं, यदि हां तो प्रतिदिन कितनी संख्या में?

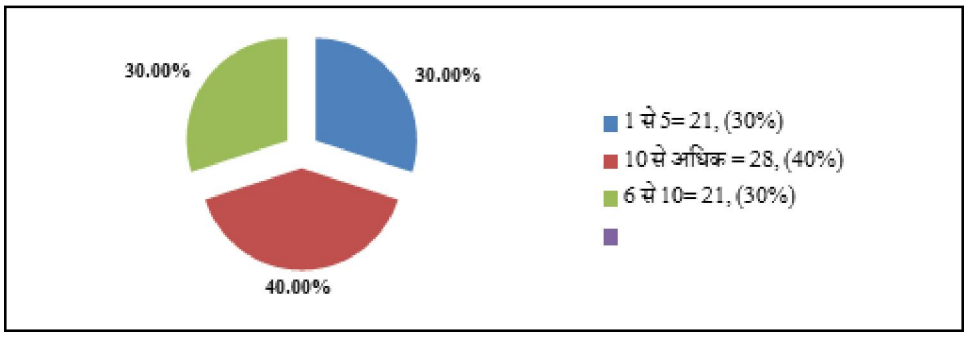

विश्लेषण

एक पत्रकार की दैनिक कार्यशैली में प्रेस नोट अहम होते हैं। पूर्व में सरकारी और गैर सरकारी कार्यक्रमों के प्रेस नोट और राजनेताओं की प्रतिक्रियाएं एवं बयान प्रकाशन हेतु समाचार पत्रों के कार्यालयों में लिखकर भेजे जाते थे। स्मार्ट मोबाइल फोन के दौर में इस व्यवस्था पर अधिकांश उत्तरदाताओं का मत है कि उन्हें प्रेस नोट और प्रतिक्रियाएं अब मोबाइल के माध्यम से प्राप्त हो रही हैं। इनमें से 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्हें प्रतिदिन 10 से अधिक कार्यक्रमों के प्रेस नोट मोबाइल के माध्यम से मिलते हैं। जबकि, 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्हें प्रतिदिन 6 से 10 और इतने ही प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि 1 से 5 प्रेस नोट और बयान प्रतिदिन मोबाइल पर ही मिलते हैं। प्राप्त प्रतिक्रियाएं दर्शाती हैं कि मोबाइल फोन की तकनीक और पहुंच उन्नत होने से समाचार पत्र में प्रकाशन हेतु सूचनाएं अब मोबाइल पर ही भेजना पसंद कर रहे हैं।

4. सरकारी और गैर सरकारी कार्यक्रमों के प्रेस नोट, राजनेताओं की प्रतिक्रियाएं एवं बयान आदि किस मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से सर्वाधिक प्राप्त् होते हैं?

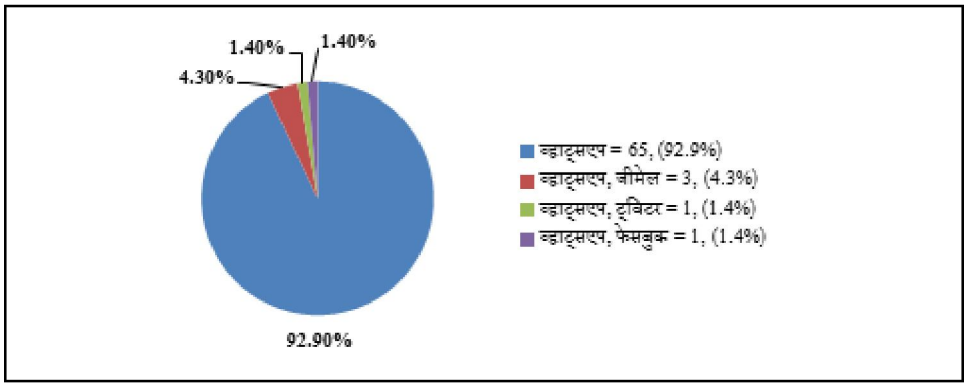

विश्लेषण

सरकारी तथा गैर–सरकारी कार्यक्रमों के प्रेस नोट और राजनेताओं की प्रतिक्रियाओं के प्रकाशन हेतु किस मोबाइल एप्लिकेशन का प्रयोग सर्वाधिक किया जा रहा है, इसके प्रति उत्तर में लगभग 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि उन्हें सभी तरह की प्रतिक्रियाएं मैसेजिंग एप व्हाट्सएप के माध्यम से प्राप्त हो रही हैं। जबकि, 4.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने व्हाट्सएप और जी–मेल दोनों माध्यमों से प्राप्त व होने का विकल्प चुना। मात्र 1.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने व्हाट्सएप, फेसबुक तथा ट्वीटर जैसे माध्यमों का विकल्प चुना। इन प्रतिक्रियाओं से ज्ञात होता है कि समाचार पत्रों के कार्यालयों में प्रेस नोट देकर आने की अपेक्षा मैसेजिंग एप्लिकेशन द्वारा भेजने का प्रचलन बढ़ने से होने वाले परिर्वतन का भी आंकलन किया जा सकता है।

5. आपको सरकारी और गैर सरकारी कार्यक्रमों के प्रेस नोट, राजनेताओं की प्रतिक्रियाएं एवं बयान आदि मोबाइल पर किस रूप में सबसे ज्यादा प्राप्ते होते हैं?

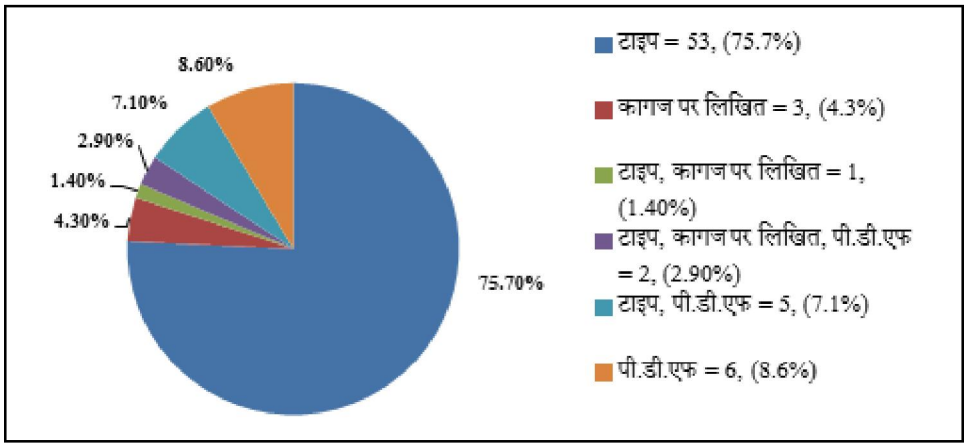

विश्लेषण

समाचार प्रकाशित करने के लिए पहले लिखित सामग्री समाचार पत्र कार्यालयों में पहुंचते थे,

लेकिन मोबाइल फोन तकनीक विकसित होने के बाद जो स्थिति देखने को मिल रही है उसमें 76.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि उन्हें प्रेस नोट और बयान टंकित रूप में प्राप्त हो रहे हैं। जबकि, 8.6 प्रतिशत ने पीडीएफ रूप में और 4.3 प्रतिशत ने अब लिखित रूप में प्रेस नोट प्राप्त होने की बात स्वीकारी। इसके इतर 7.1 प्रतिशत नेटंकित और पीडीएफ, 2.9 प्रतिशत ने लिखित तथा 1.4 प्रतिशत ने टंकित और लिखित समाचार प्राप्ती होने की बात स्वीकारी। अतः कहा जा सकता है कि समाचार पत्रों के दफ्तरों में पेपर पर लिखित प्रेस नोट का मिलना कम हो गया है और मोबाइल पर टंकित रूप में प्रेस नोट उलपब्ध हो रहे हैं। इससे पत्रकारों को मिलने वाली राहत का अनुमान लगाया जा सकता है।

6. क्या कार्यक्रमों के प्रेस नोट के साथ संबंधित का फोटो (छायाचित्र) भी मोबाइल पर ही प्राप्त हो जाता है?

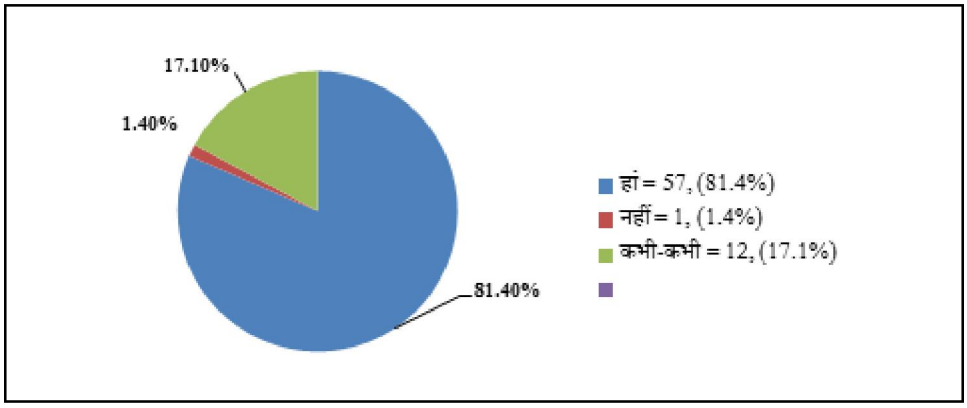

विश्लेषण

स्मार्ट फोन में उच्च गुणवत्ता का कैमरा उपलब्ध होने से समाचार पत्र में प्रकाशन के लिए क्या फोटो (छायाचित्र) भी उसी पर उपलब्ध होने लगे हैं, इसके प्रति उत्तर में 81.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि उन्हें कार्यक्रमों के प्रेस नोट के साथ फोटो भी मोबाइल फोन पर ही प्राप्त हो रहे हैं। जबकि, सिर्फ 1.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ऐसा होने से मना कर दिया वहीं 17.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्हें कभी–कभी ही मोबाइल पर फोटो प्राप्त होते हैं। ऐसे में मोबाइल फोन के माध्यम से हो रहे परिर्वतनों का अनुमान लगाया जा सकता है, जहां पहले कार्यक्रमों में फोटोग्राफर को अनिवार्य रूप से भेजकर फोटो प्राप्त किए जाते थे वहीं अब स्वयं ही फोटो खींचकर पत्रकारों को उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

7. क्या लघु कार्यक्रमों के प्रेस नोट मोबाइल पर प्राप्त होने से आप उन्हें कवर करने कार्यक्रम स्थल पर जाते हैं?

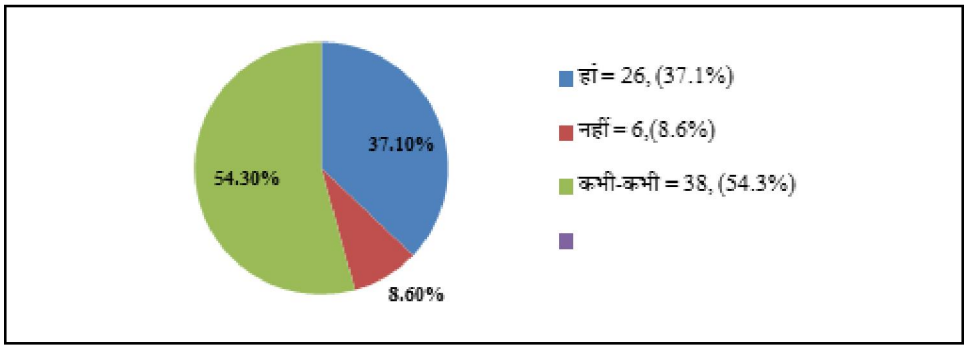

विश्लेषण

पहले छोटे या बड़े कार्यक्रमों को कवर करने के लिए समाचार पत्र के पत्रकार व फोटोग्राफर आयोजनों में शामिल होते थे। वर्तमान में स्थिति यह है कि 54.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकारा कि मोबाइल पर प्रेस नोट मिलने से अब वह लघु कार्यक्रमों में कभी–कभी ही जा पाते हैं, जबकि 37.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कार्यक्रम कवरेज के लिए कार्यक्रम स्थल पर जाने की बात कही। 8.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि वह कार्यक्रम स्थल पर नहीं जाते हैं। प्राप्त प्रतिक्रियाओं से पता चलता है कि कार्यक्रम कवरेज करने के लिए पत्रकारों के कार्यक्रम स्थल पर जाने में कमी आई है।

8. क्या संवाददाता के रूप में किसी घटनाक्रम या कार्यक्रम की कवरेज के समय आप फोटो भी अपने मोबाइल फोन द्वारा ही लेते हैं?

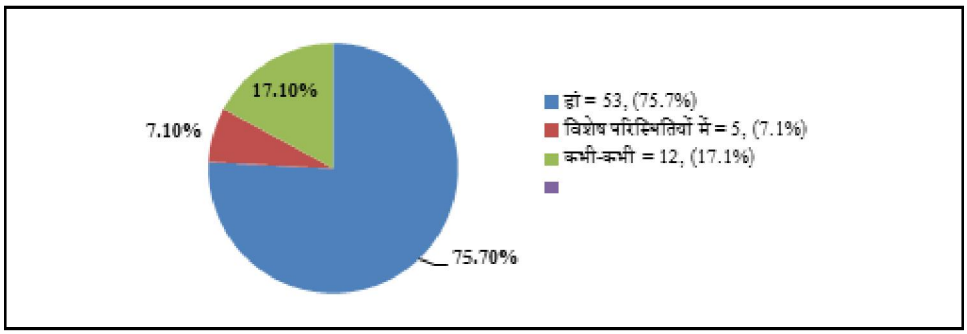

विश्लेषण

वर्तमान समय में मोबाइल फोन कई प्रकार के एडवांस फीचरों से युक्त हैं। एक छोटे से यंत्र में कैमरा का फीचर मिलने से इसकी उपयोगिता का भी विस्तार हुआ है। 75.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत है कि वे किसी घटनाक्रम या कार्यक्रम की कवरेज के समय फोटो भी अपने मोबाइल फोन द्वारा ही लेते हैं, जबकि 17.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कभी–कभी और 7.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने विशेष परिस्थितियों में मोबाइल फोन से फोटो लेने की बात को

स्वीकारा है। ऐसे में माना जा सकता है कि समाचार पत्रों में अधिकांश फोटो मोबाइल द्वारा ही छप रहे हैं। साथ ही यह फोटोग्राफरों की महत्ता को कम कर रहा है।

9. क्या आपको दूरस्थ तथा ग्रामीण क्षेत्रों में हुई घटनाओं की जानकारी मोबाइल द्वारा ही प्राप्त हो जाती हैं?

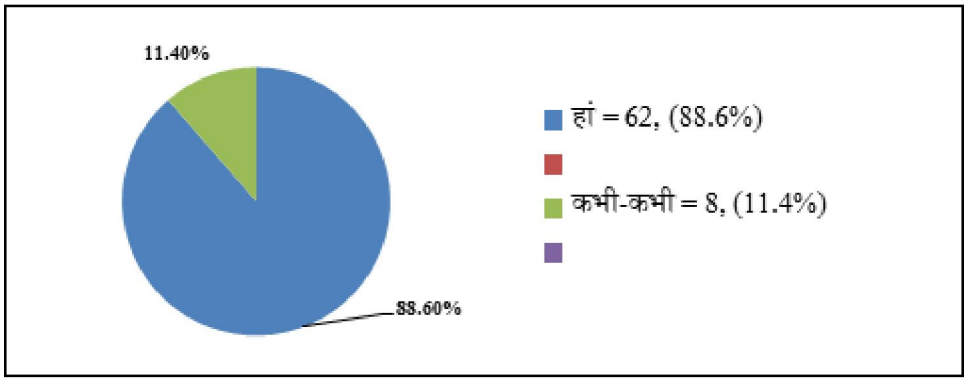

विश्लेषण

एक समय था जब दूरस्थ तथा ग्रामीण क्षेत्रों में घटित घटनाओं की सूचना प्राप्त होने और उनके समाचार बनने में समय लगता था, कई बार पत्रकारों को घटना स्थल पर दौड़ना पड़ता था। वर्तमान में 88.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में हुई घटनाओं के बारे में उन्हें मोबाइल पर ही पता चलता है। 11.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कभी–कभी मोबाइल पर ही सूचना मिलने की बात कही। ऐसे में आंकलन किया जा सकता है कि मोबाइल फोन के आने से सूचना तंत्र कितना तीव्र हुआ है। इससे पत्रकारों की असमय होने वाली भागमभाग भी कम हुई है।

10. क्या आपको क्षेत्र में हुई घटनाओं की सूचना न्यूज पोर्टलों के माध्यम से मोबाइल पर ही प्राप्त हो जाती हैं?

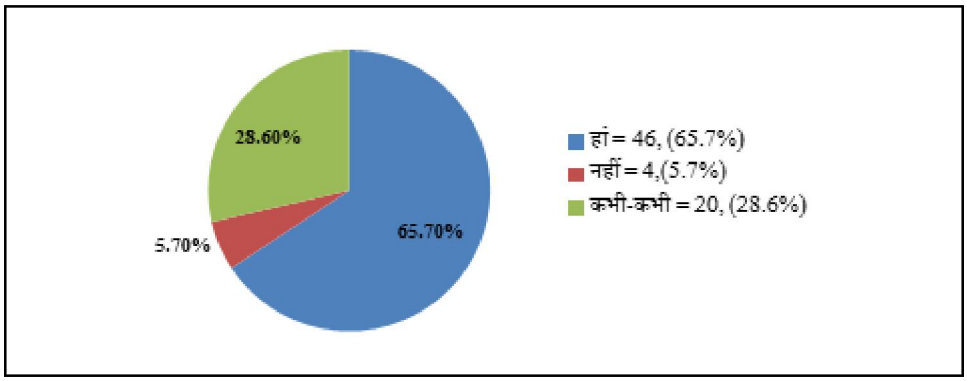

विश्लेषण

मोबाइल पर संचालित सोशल मीडिया माध्यमों की मदद से समाचार पोर्टलों के लिंक सर्वाधिक साझा किए जाते हैं, समाचार पोर्टल बड़ी संख्या में सूचनाएं पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। ऐसे में 65.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उन्हें घटनाक्रमों की जानकारी समाचार पोर्टलों से ही मिलती है। 28.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कभी–कभी तथा 5.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ऐसा नहीं होने की बात कही। ऐसे में कहा जा सकता है कि पत्रकारों के लिए समाचार पोर्टल भी सोर्स ऑफ इन्फॉर्मेशन बन रहे हैं।

11. क्या घटनाक्रमों की सूचना वेब न्यूज पोर्टलों के माध्यम से प्राप्त होने पर तथ्यों को पुष्ट करने या डिफरेंशिएट करने का समय मिल जाता है?

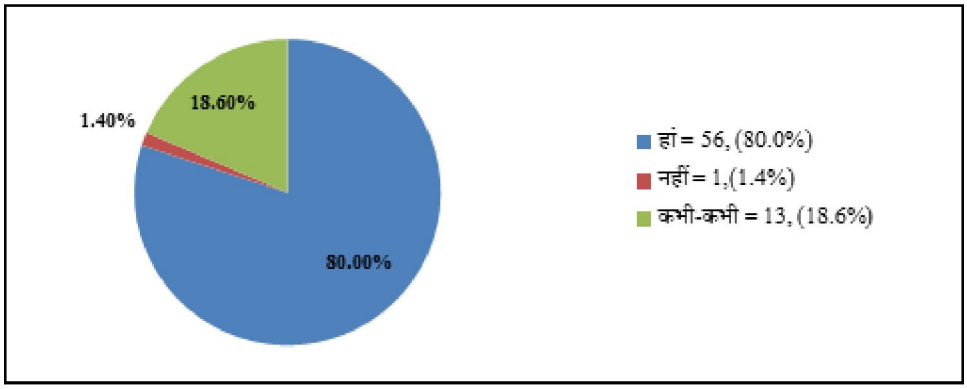

विश्लेषण

क्षेत्र में हुई घटना का पता चलने और उसे विस्तार से लिखने के लिए उससे संबंधित जानकारियां एकत्र करने में समाचार पत्र से जुड़े संवाददाताओं को समय लगता है। समाचार पोर्टलों में घटनाओं का प्रचार–प्रसार भी उपयोगी हो सकता है। कुल 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि न्यूज पोर्टलों से घटनाक्रम की सूचना मिलने पर उसकी पुष्टि करने के साथ–साथ समाचार को डिफरेंशिएट करने का समय मिल जाता है। जबकि 18.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कभी–कभी और 1.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ऐसा नहीं होने की बात कही। इससे पता चलता है कि मोबाइल और इंटरनेट माध्यमों से पत्रकारों को कार्य करने में आसानी हुई है।

12. क्या मोबाइल पर सूचनाएं और समाचार प्राप्त होने से आपका कार्य क्षेत्र में जाना पहले की अपेक्षा कम हो गया है?

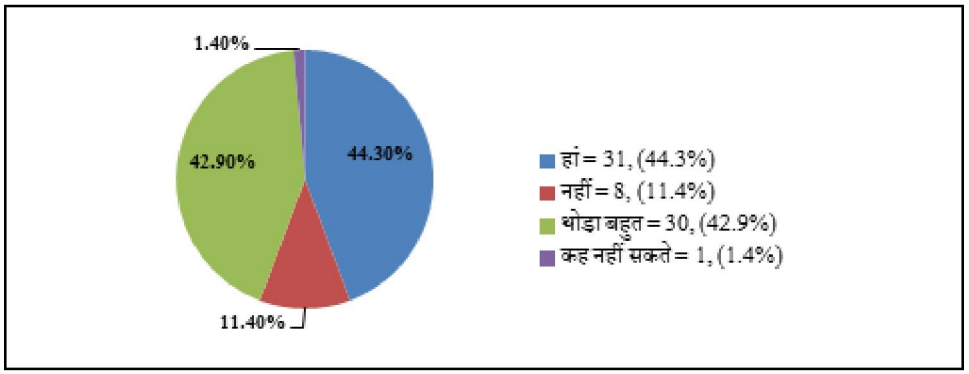

विश्लेषण

पत्रकारों की फील्ड मूवमेंट को जानना भी अहम हो जाता है। 44.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि मोबाइल पर सूचनाएं मिलने से उनका घटना क्षेत्र में जाना कम हुआ है। 42.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने थोड़ा–बहुत प्रभावित होने की बात स्वीकारी, जबकि 11.4 ने कोई असर न होने की बात कही है।

13. मोबाइल तकनीक के विकसित होने से पहले आप न्यूज कवरेज करने के लिए कार्यक्षेत्र में कितना समय बिताते थे?

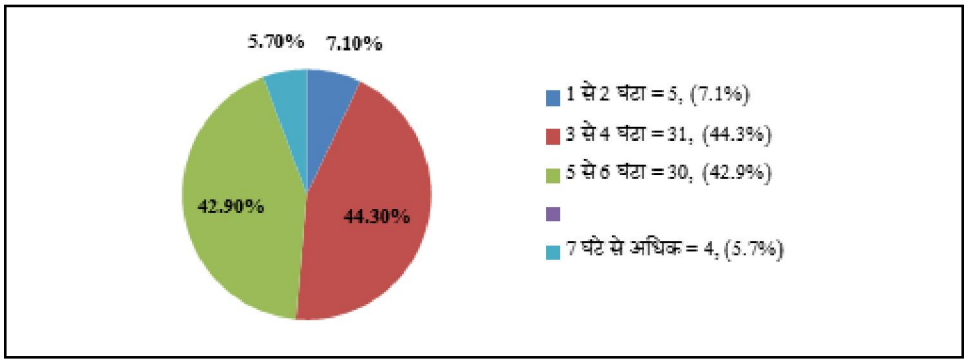

विश्लेषण

मोबाइल फोन तकनीक के विकसित होने से पहले 42.9 प्रतिशत उत्तरदाता 5 से 6 घंटे 44.3 प्रतिशत उत्तरदाता 3 से 4 घंटे कार्यक्षेत्र में बिताते थे, मात्र 5.7 प्रतिशत उत्तरदाता ही 7 घंटे से अधिक कार्यक्षेत्र में रहते थे। जबकि 7.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पहले 1 से 2 घंटे कार्यक्षेत्र में रहने की बात कही थी।

14. वर्तमान समय में मोबाइल तकनीक द्वारा आसान हुई गतिविधियों के चलते कार्यक्षेत्र में आपका मूवमेंट कितना हो गया है?

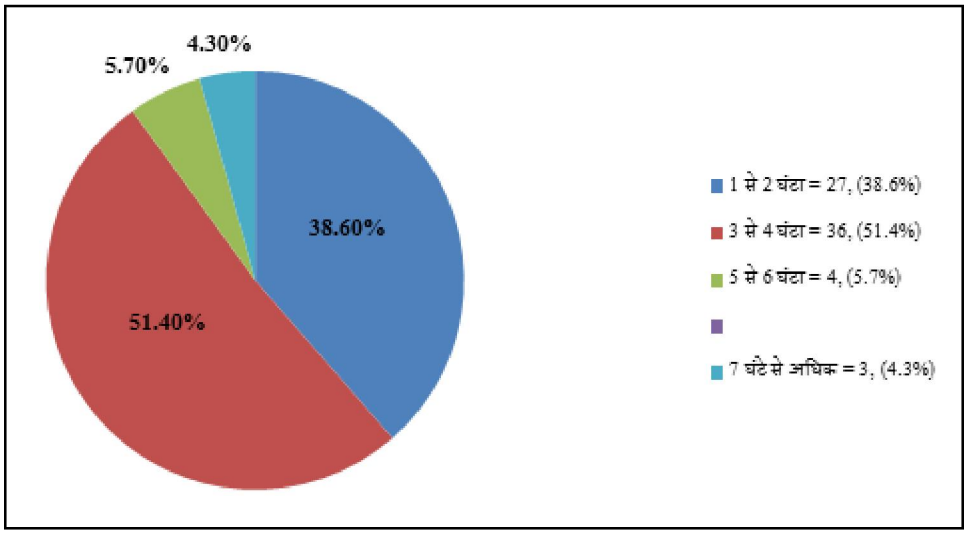

विश्लेषण

मोबाइल फोन तकनीक के विकसित होने के बाद से 5.7 प्रतिशत उत्तरदाता 5 से 6 घंटे तथा 51.4 प्रतिशत उत्तरदाता 3 से 4 घंटे कार्यक्षेत्र में बिताने लगे हैं। मात्र 38.6 प्रतिशत उत्तरदाता ही 1 से 2 घंटे कार्यक्षेत्र में रहते हैं। जबकि 4.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 6 घंटे से अधिक कार्यक्षेत्र में रहने की बात स्वीकारी।

15. क्या आपको मोबाइल के माध्यम से सूचनाएं, समाचार और फोटो जुटाते समय किसी प्रकार की समस्या आती है, यदि हां तो वे क्या और किस रूप में हैं?

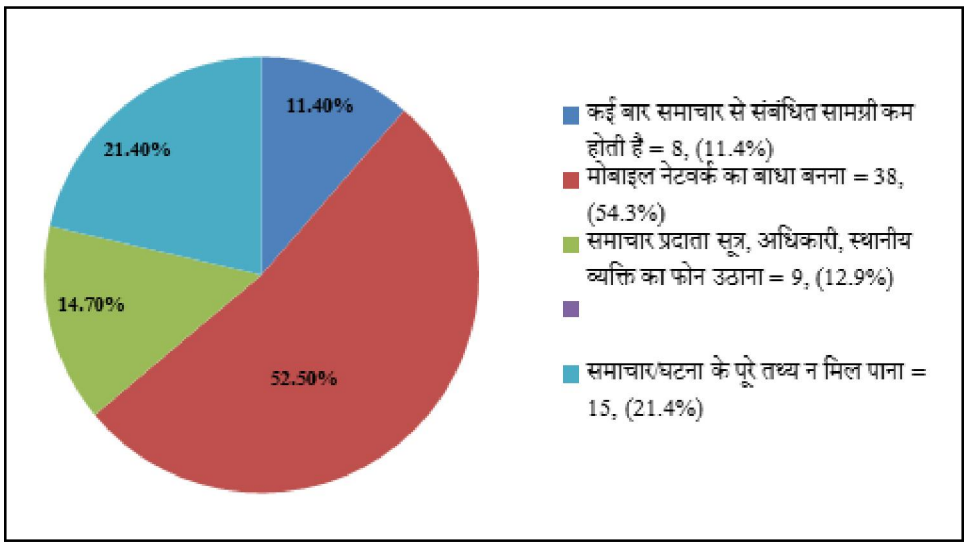

विश्लेषण

मोबाइल फोन के बढ़ते चलने के बीच कुछ समस्याएं भी होने संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए कुल 54.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने मोबाइल नेटवर्क की समस्या होने की बात को स्वीकार किया। जबकि 21.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत है कि मोबाइल से घटना के पूरे तथ्य नहीं मिल पाते हैं, वहीं 12.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सूत्र से सम्पर्क नहीं होने की बात को स्वीकार किया है। यह अध्ययन कार्य उत्तराखंड क्षेत्र में किया गया था प्राप्त उत्तरों से स्पष्ट है कि उत्तराखंड में मोबाइल नेटवर्क की समस्या बनी हुई है।

16. क्या आपका मीडिया संस्थान न्यूज लिखने के लिए मोबाइल एप्लिकेशन भी उपलब्ध कराता है?

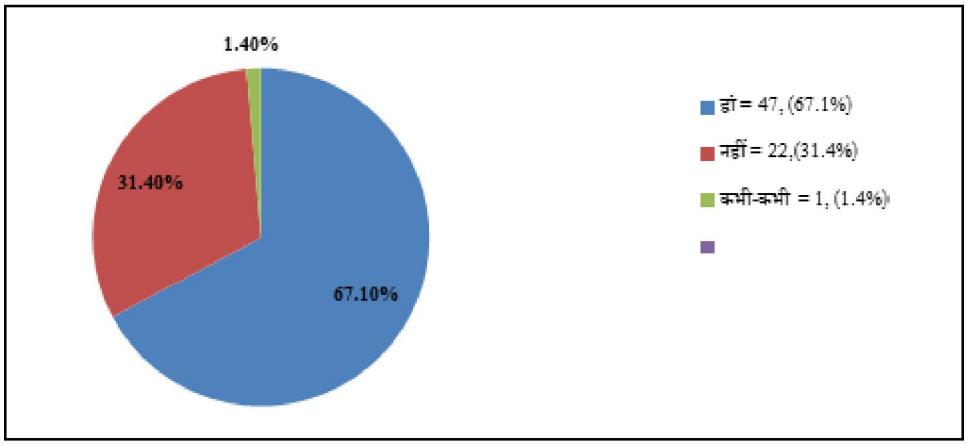

विश्लेषण

स्मार्ट फोन आने से मीडिया संस्थानों ने समाचार सामग्री प्राप्त करने के लिए संवाददाताओं को कौन सी नई सुविधाएं प्रदान की हैं, इससे संबंधित प्रति उत्तर में 67.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उनका संस्थान समाचार लिखने हेतु मोबाइल एप्लिकेशन उपलब्ध करा रहा है, 31.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस मत को अस्वीकर कर दिया और 1.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कभी–कभी के विकल्प का चयन किया। ऐसे में अनुमान है कि अधिकांश समाचार पत्र संस्थान अपने संवाददाताओं को मोबाइल एप्लिकेशन से न्यूज लिखने के लिए प्रेरित कर रहे हैं और संवाददाता भी बगैर न्यूजरूम आए कहीं से भी समाचार लिखकर सीधा न्यूज डेस्क को उपलब्ध करा रहे हैं।

परिणाम व निष्कर्ष

मोबाइल फोन और इंटरनेट के विकास से संचार क्षेत्र में एक नई आधुनिकता का उदय हुआ है। स्मार्टफोन से दैनिक दिनचर्या से संबंधित छोटे–बड़े कार्य आसान हुए हैं। इस अध्ययन से

स्पष्ट हुआ कि समाचार पत्र के पत्रकारों की कार्यशैली पर मोबाइल का अत्यंत रूप से प्रभाव पड़ा है। उनके पत्रकारीय कार्य अधिकांशतः मोबाइल केंद्रित हो गए हैं। एक समय में समाचार संकलन के लिए प्रिंट मीडिया के संवाददाता जगह–जगह जाते थे और शाम को कार्यालय पहुंचकर उसे निर्धारित समय सीमा पर न्यूज डेस्क को उपलब्ध कराते थे। घटनाक्रम को कवर करने और समाचार सामग्री डेस्क को उपलब्ध कराने के लिए समय प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण लगता था, लेकिन मोबाइल फोन तकनीक विकसित होने से समाचार पत्रों के मीडिया कर्मियों का घटनास्थल पर पहुंचना तथा कार्यालयों में प्रेस नोट का आना भी कम हुआ है। सर्वाधिक कार्य मोबाइल फोन पर मैसेंजिंग एप्लिकेशन व्हाट्सएप के माध्यम से ही हो रहे हैं। कार्यक्रमों के प्रेस नोट और नेताओं के बयान पत्रकारों को सबसे अधिक उनके व्हाट्सएप नंबर पर ही प्राप्त हो रहे हैं।

अध्ययन के उपरांत यह तथ्य भी उजागर हुआ कि समाचार पत्रों में प्रकाशन के लिए समाचार समाग्री पत्रकार तक टंकित रूप में पहुंचने से पत्रकारों के समय की बचत हो रही है। साथ ही दूरस्थ क्षेत्रों में हुई घटनाओं की जानकारी और फोटो भी मोबाइल फोन पर ही प्राप्त हो रहे हैं। यह पत्रकारों के साथ–साथ संस्थानों के लिए भी लाभकारी है। इतना ही नहीं स्थानीय घटनाएं भी पत्रकारों को मोबाइल पर व्हाट्सएप द्वारा मिलने से उन्हें समाचारों को विस्तार और नई दिशा देने का समय मिल जाता है। ऐसे में एक बात सामने आती है कि समाचार पत्रों के पत्रकारों के कार्य मोबाइल केंद्रित होने के साथ ही व्हाट्सएप पर अधिक केंद्रित हो गए हैं।

वहीं, मोबाइल फोन तकनीक अधिक समृद्ध और सुविधाजनक होने व स्मार्टफोन में उच्च गुणवत्ता के कैमरे उपलब्ध होने से समाचार पत्र के पत्रकार स्वयं ही घटनाक्रम की कवरेज के समय फोटो भी प्राप्ता कर रहे हैं। वर्तमान समय में समाचार पत्रों के फोटोग्राफरों के रोजगार पर संकट बना हुआ है यहां तक कि कई वरिष्ठ फोटोग्राफर निकाले भी जा चुके हैं। जब संवाददाता ही अपने मोबाइल फोन से फोटो लेने में सक्षम हैं तो फोटो पत्रकारों के भविष्य पर संकट तय है। तकनीक का उपयोग करते हुए मीडिया संस्थानों ने संवाददाताओं को विभिन्न मोबाइल एप्लिकेशन उपलब्ध कराए हैं, जिनके सहयोग से संवाददाता कहीं से भी समाचार सामग्री न्यूज डेस्क तक भेजने में सक्षम हो गए हैं। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि भविष्य में समाचार पत्रों का कार्य मोबाइल केंद्रित होगा और पत्रकार जनकार्यालय आए बिना ही समाचार डेस्क को भेजेंगे। कोरोना काल के समय मीडिया संस्थानों ने वर्क फ्रॉम होम व्यवस्था लागू करते हुए इसका सफल परीक्षण भी कर लिया है। यह अध्ययन उत्तराखंड क्षेत्र में कार्यरत पत्रकारों के मध्य किया गया था जिसमें सामने आया कि मोबाइल नेटवर्क की समस्या बहुत सर्वाधिक है। ऐसे में विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में कार्यरत पत्रकारों को मोबाइल के माध्यम से कार्य करने में निरंतर समस्या का सामना भी करना पड़ रहा है। संभवतः प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से ऐसी कई समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए उनके समाधान को उजागर करने हेतु एक सफल प्रयास साबित हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. ABC. (April 2023). Language wise certified circulation figures for the audit period. (July-Dec. 2022 & Jan.-June 2022). Retrieved from https%//www.auditbureau.org/-pdf accessed on 10/07/2023 at 11:30am.
2. Department of Telecommunications, India. Retrieved from https%//dot.gov-in/data-services/2574 accessed on 27/06/2023 at 1:30pm.
3. Goujard, C. (2016) 'Mobile Journalism: Defining a New Storytelling Language', Mediashift.org. [Online]. Available at: https://goo.gl/1KS3A8, (Accessed on 12 July 2023).
4. Mohammedselih, Salah, (2017). Mobile journalism using Smartphone in journalistic work. Uppsala Universitet DOI:10.13140/RG.2.2.20124.51849, Retrieved fromhttps:/ /www.researchgate.net/publication /342546973accessed on 18/06/2023 at 10:15am.
5. Parthasarthy, Vibodh, and Alam Srinivas. 2013. Mapping Digital Media: India. Open Society Foundations. Retrieved from http://www.opensocietyfoundations.org/sites/ default/files/mapping-digitalmedia-india-20130326.pdfaccessed on 25/07/2023 at 02:45pm.
6. Radhakrishnan, Abhimanyu (2009, June 2023). First Android phone in India launched today. The Economic Times. Retrieved from https://m-economictimes-com.translate.goog/tech/hardware/first-android-phone-in-india-launched-today/ articleshow/4689118.cms\Accessed on 08/08/2023 at 12:45pm.
7. TRAI: QPIR. (May 2023). The Indic telecom services performance indicators. (Oct.-Dec. 2022). Retrieved from https://www.trai.gov.in/sites/default/files/ QPIR_31052023_0.pdfaccessed on 25/07/2023 at 11:23pm.
8. Twizeyumukiza, Alexandre & Mberia, Hellen & Nabuzale, Caroline. (2018). Influence of mobile phone usage on journalism practices in Rwanda. International journal of science and research, 1566-1570. Dio: 10.21275/ART20182556 Accessed on 16/06/ 2023 at 03:40pm.
9. Wenger, D., Owens, L., & Thompson, P. (2014). Help wanted: mobile journalism skills required by top U.S. news companies. Electronic News, 8(2), 138-149.
10. कुमार, संजय (2010). वेब पत्रकारिता का भविष्य उज्ज्वल है, वेब पत्रकारिता 53–56. दिल्ली : श्री नटराजन प्रकाशन.
11. जायसवाल, पवन. (2022, अगस्त 23). मोबाइल फोन जर्नी. नवभारत टाइम्स डॉट कॉम. Retrieved fromhttps://navbharattimes.indiatimes.com/business/business-news/mobile-phone-journey-in-india-know-the-story-from-launch-of-mobile-phone-service-to-5g/ articleshow/93733053.cmsAccessed on 14/07/2023 at 11:40am.
12. झिंगरन, प्रभु. (2021). मोबाइल पत्रकारिता अवधारणा, संभावनायें और तकनीक, वाराणसीः भारती प्रकाशन.
13. बस्तवी, अशरफ. (2022, जनवरी 07). मोबाइल पत्रकारिता (MOJO) के बारे में महत्वपूर्ण बातें, जो आपको जानना चाहिए. Retrieved from https://www.youthkiawaaz.com/2022/01/

important-things-you-must-know-about-mobile-journalism-mojo-hindi-article/ accessed on 19/08/2023 at 06:55pm.

14. भास्कर. (2020, अगस्त 02). जर्मनी ऑफ मोबाइल फोन. दैनिक भास्कर. Retrieved from https://dainik-b.in/h0ELOzocC8accessed on 11/06/2023 at 09:34pm.
15. मिश्र, उमाशंकर (2020). इंटरनेट पर उपलब्ध हिन्दी समाचार पत्रों के स्वरूप का अध्ययन. संचार माध्यम, 32(2), 60–68.
16. राम, राजू (2022, अप्रैल 2023). यह था दुनिया का पहला स्मार्टफोन जो लॉन्च हुआ था 27 साल पहले, दिखता था ऐसा. Retrieved from Gizbot. https://hindi.gizbot.com/news/which-was-the-world-s-first-smartphone-and-when-was-it-launched-022172.htmlaccessed on 24/08/2023 at 11:28am.